1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।
ऋग्वेद 1/164/46
एक ही ईश्वर को विद्वान् लोग अनेक नामों से कहते हैं, पुकारते हैं।
The wise men invoke the one God by different names.

वर्ष 42, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 दिसम्बर, 2018 से रविवार 23 दिसम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्तूबर, 2018

आर्यसमाज की संस्थाओं एवं आर्य विभुतियों का हुआ सम्मान

आर्यरत्न, आर्य गौरव, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य गौरव, सम्मान पत्रों, वेद भगवान एवं स्मृति चिह्नों से किया गया अलंकृत

श्री देव महाजन जी को आदर्श आर्यसमाज के रूप में आर्यसमाज ह्युस्टन का सम्मान प्रदान करते सम्मेलन स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी।

स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी को 'आर्य रत्न' सम्मान से सम्मानित करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत, महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद, स्वामी रामदेव, श्री योगेश मुंजाल, श्री अरुण अब्रोल एवं प्रदेशिक सभा के मन्त्री श्री एस. के. शर्मा जी

विश्व की सबसे सुन्दर आर्य समाज मन्दिर - आर्य दिवाकर सूरीनाम का सम्मान श्री इन्द्र गंगा बिशुन सिंह जी को प्रदान करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, केन्द्रीय मन्त्री डॉ. सत्यपाल सिंह एवं श्री विनय आर्य

योग गुरु स्वामी रामदेव जी को गायत्री मन्त्र का स्मृति चिह्न भेंट करते श्री सुरेशचन्द आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, श्री ओम प्रकाशआर्य जी एवं महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी

प्रगति मैदान नई दिल्ली में फिर हुआ वैदिक साहित्य प्रचार यज्ञ का आगाज

विश्व पुस्तक मेला : 5 जनवरी से 13 जनवरी, 2019

आओ ! "सत्यार्थ प्रकाश" को फिर बनाएं सबके आकर्षण का केन्द्र

अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को मात्र 10/- में उपलब्ध कराने के लिए 20/- प्रति सहयोग प्रदान करने आह्वान

समस्त साहित्य प्रेमियों, आर्यसन्देश के सुधि पाठकों एवं महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों, मन्तव्यों को प्रचारित प्रसारित करने में संलग्न आर्यजनों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के तत्त्वावधान में नई दिल्ली के प्रगति मैदान में दिनांक 5 जनवरी से 13 जनवरी, 2019 तक आयोजित होने वाले विश्व पुस्तक मेले में अंग्रेजी साहित्य प्रचार के लिए एक स्टाल एवं हिन्दी साहित्य प्रचार के लिए 10 स्टाल आरक्षित कराए गए हैं। इस पुस्तक मेले में आप सभी के आर्थिक सहयोग से 50/- रुपये की कीमती वाला सत्यार्थ प्रकाश 20/- रुपये की सब्सीडी के साथ केवल मात्र 10/- रुपये में आमजनमानस के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।

- शेष पृष्ठ 7 पर

सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 0133002100005251
पंजाब नेशनल बैंक, IFSC - PUNB0013300 MICR - 110024092

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। *- महामन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

प्राणों द्वारा आत्मिक शक्ति का जागरण

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुवितायं गन्तन।
इयं वो असमत् प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजे न दिव उत्साउदन्यवे।। -ऋ. 5/57/1
ऋषिः **श्यावाश्व आत्रेयः।।** देवता - **मरुतः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - **रुद्रासः** =हे प्राणो! **इन्द्रवन्त** = आत्मैश्वर्यवाले **सजोषसः** = साथ मिलकर सेवन करने वाले **हिरण्यरथाः** = हितरमणीय रहणवाले तुम **सुविताय** = हमारी उत्तम गति के लिए **आ गन्तन** = आओ, हममें आओ। **इयम्** =यह **अस्मत्** = मेरी **मतिः** = मति, इच्छा **वः** = तुमको **प्रतिहर्यते** = चाह रही है, कामना कर रही है, अतः **तृष्णजे न उदन्यवे** = जैसे प्यासे चातक के लिए **दिवः उत्साः** = आकाश से वर्षाधाराएं आती हैं, वैसे तुम्हारे पाने के प्यासे मुझे तु प्राप्त होओ, आओ।

विनय - हे प्राणो! तुम इन्द्रवन्त हो। आत्मशक्ति या आत्मैश्वर्य तुम्हारे साथ रहता है। शरीर में जितने प्राण भरे रहेंगे उतनी ही इसमें आत्मशक्ति जाग्रत् होगी, चूंकि तुम सब मिलकर शरीर का सेवन करने वाले, प्राण-अपान आदि रूप से शरीर के अंगों में विभक्त होकर सारे शरीर को अपने सम्मिलित यत्न से धारनेवाले हो, अतः तुम्हारी वृद्धि से हमारी सर्वांगीण उन्नति होती है। हम यह भी जानते हैं कि तुम्हारा रंहण (संचार) हित और रमणीय दोनों है। यद्यपि संसार में प्रायः हितकर वस्तुएं आनन्ददायक नहीं होतीं, किन्तु तुम्हारे पूरण से जहां बड़ा भारी हित होता है वहां तुम्हारे संचार से शरीर में बड़ा ही आनन्द भी अनुभूत होता है। शरीर में प्राणों के बढ़ जाने से जो एक शक्ति का, यौवन का, उत्साह का, एक हितकारी नशे का-सा आनन्द अनुभूत होता है, उसे प्राण-साधना करने वाले ही जानते हैं। इसलिए हे प्राणो! मेरा यह शरीर तुम्हें चाह रहा है। जब से मुझे तुम्हारे इस माहात्म्य का कुछ पता लगा है और कुछ अनुभव मिला है, तब से मेरा ध्यान अन्य सब बातों की ओर से हटकर केवल इसमें लगा हुआ है कि मेरे शरीर में प्राणों का आगमन, प्राणों का पूरण कब होगा। तब से मेरी मति, मेरी कामना तुम्हारी ओर ही दौड़ रही है। मैं देखता हूं कि शरीर में तुम्हारे आगमन के बिना मेरा 'सुवित', मेरी उत्तम गति नहीं हो सकती। मैं देखता हूं तुम्हारी कमी के कारण-प्राणसाधना द्वारा शरीर में तुम्हारा पूरण न हो जाने के कारण मेरी बड़ी हानि हो रही है। इसलिए हे प्राणदेवो! मैं तुम्हारा पूरण न हो जाने के कारण मेरी बड़ी हानि हो रही है। इसलिए है प्राणदेवो! मैं तुम्हारे पाने का प्यासा हो गया हूं। जैसे चातक आकाश की दिव्यधाराओं का प्यासा होता है या जैसे गर्मी के दिनों में पिपासाकुल मनुष्य 'पानी-पानी' चिल्लाता है, उसी प्रकार मुझे भी अब तुम्हारे आपूरण बिना चैन नहीं मिल सकता, इसलिए हे प्राणरूपी दिव्य जलो! तुम्हारे उत्तम कल्याण के लिए आओ और मेरी पिपासा बुझा जाओ। यह शरद् ऋतु तुम्हारे आगमन के लिए

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आत्म हत्या की ओर क्यों बढ़ रहे हैं बच्चे

आज स्कूल चारदीवारी वाली जगह बन गए हैं, जहां बच्चे केवल किताबी शिक्षा ग्रहण करते हैं दूसरा घर वहां भी वह दीवारों के अन्दर तक सिमट गये हैं। कॉलोनी भले कितनी पॉश हो, भले ही उन्हें आधुनिक सुविधाएं दी जा रही हैं, याद रखें बच्चे अकेले हैं। उनके पास संयुक्त परिवार नहीं है कि माँ ने डांट दिया तो दादी, ताई या बुआ ने स्नेह दे दिया। आज इस कमी के कारण उनके अंदर असुरक्षा की भावना पैदा हो रही है। बच्चों के साथ खेलें, उन्हें समय दें, भावनात्मक रूप से मजबूत करें, उनके अन्दर नकारात्मकता को जन्म न लेने दें। स्कूलों को समझना होगा उन्हें बच्चें को सिर्फ कागजी शिक्षा का ठेका नहीं दिया बल्कि उन्हें सामाजिक शिक्षा और भावनात्मक स्तर पर मजबूत बनाने की जिम्मेदारी भी हैं।

वैसे तो 6 दिसम्बर की सुबह अखबार में किसी से चर्चा या बहस करने को बाबरी ढांचा, अगस्ता वेस्टलैंड घोटाले से लेकर माल्या के प्रत्यार्पण और सीबीआई विवाद जैसी कई खबर मौजूद थी। किन्तु इसी बीच एक छोटी सी खबर थी कि शिक्षक की डांट से आहत होकर दिल्ली के इंद्रपुरी इलाके में कक्षा 7 की एक छात्रा ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। एक पल को तो यह सामान्य खबर लगी लेकिन दूसरे पल अचानक मन में प्रश्न उठा कि सिर्फ इस वजह से आत्महत्या की कि शिक्षक ने डांट दिया था? इसके बाद जेहन में एक पुरानी और दुखद स्मृति जिन्दा हो गयी जब कई साल पहले मेरे गाँव में पड़ोस के एक लडके ने दसवीं क्लास में फेल हो जाने पर इस कारण आत्महत्या कर ली थी, कारण उसके पिता ने उसे डांट दिया था।

ऐसा ही कुछ पिछले साल मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में हुआ था जहां प्रिंसिपल की डांट-फटकार से आहत 10वीं की एक छात्रा ने खुदकुशी कर ली थी। इसके बाद का एक मामला और मुझे याद आया कुछ समय पहले दिल्ली कैंट स्थित आर्मी स्कूल में एक दसवीं की छात्रा स्कूल में कंप्यूटर की शिक्षिका के डांटने पर घर आकर जहर खा लिया था। दरअसल अब ये खबरें इतनी आम हो चुकी हैं कि दिल्ली समेत देश के बड़े महानगरों से हर दूसरे-तीसरे दिन ऐसी खबरें अखबारों के कोनों में छपी होती है और भागती दौड़ती जिन्दगी में लोग इन पर ध्यान भी नहीं देते।

इन खबरों के जाल को तोड़ते हुए मुझे अपने स्कूल के दिन याद आ गये जब गलती पर तो अध्यापक पीटते ही थे, कई बार तो बिना गलती के डांट खानी पड़ती थी। लेकिन कभी ऐसा ख्याल मन में नहीं आया किन्तु आज छात्रों को जरा सा डांटने पर कितनी आसानी से ऐसे कदम उठा लेते हैं। हालांकि विगत कुछ वर्षों में स्कूलों में बच्चों की पिटाई पर पूरी तरह बैन लगा दिया गया, फिर भी ऐसे मामले रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि पढने, खेलने व कुछ कर दिखाने की चाह से ज्यादा आज बच्चों में अपने आप को मिटा देने की राह ज्यादा भा रही है।

इसमें सबसे पहले समस्या को खोजना होगा। इसके बाद समाधान पर ही चर्चा हो सकती हैं। यदि समस्या की बात स्कूल से करें तो बेशक आज स्कूलों में शारीरिक दंड पर पूरी तरह बैन लगा दिया, किन्तु जो बदले में मानसिक दंड देने की शुरुआत की वह ज्यादा खतरनाक है। इसमें छात्रों को बार-बार स्कूल से निकाले जाने की धमकी देना, उनके अभिभावकों को बुलाकर या क्लासरूम में सभी छात्रों के सामने अपमानित करना आदि हैं। इसे भावनात्मक रूप से मजबूत छात्र तो बर्दास्त कर जाते हैं किन्तु जो छात्र भावनात्मक रूप से कमजोर होते हैं वे इसे बर्दास्त नहीं कर पाते। हालाँकि विद्यालय ऐसे मुद्दों को सामान्य बनाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं जो पिछले कुछ सालों में नये अनुशासन के लिहाज से वर्जित से हो गए हैं।

दूसरा एक तो आज स्कूल चारदीवारी वाली जगह बन गए हैं, जहां बच्चे केवल किताबी शिक्षा ग्रहण करते हैं दूसरा घर वहां भी वह दीवारों के अन्दर तक सिमट गये हैं। कॉलोनी भले कितनी पॉश हो, भले ही उन्हें आधुनिक सुविधाएं दी जा रही हैं, याद रखें बच्चे अकेले हैं। उनके पास संयुक्त परिवार नहीं है कि माँ ने डांट दिया तो दादी, ताई या बुआ ने स्नेह दे दिया। आज इस कमी के कारण उनके अंदर असुरक्षा की भावना पैदा हो रही है। बच्चों के साथ खेलें, उन्हें समय दें, भावनात्मक रूप से मजबूत करें, उनके अन्दर नकारात्मकता को जन्म न लेने दें। स्कूलों को समझना होगा उन्हें बच्चें को सिर्फ कागजी शिक्षा का ठेका नहीं दिया बल्कि उन्हें सामाजिक शिक्षा और भावनात्मक स्तर पर मजबूत बनाने की जिम्मेदारी भी हैं। इसमें सबसे बड़ी बात यह सोचनी होगी कि वह छात्र-छात्रा के अतिरिक्त अभी कोमल मन के बच्चे भी हैं वह इस उम्र में शरारत नहीं करेंगे तो फिर कब करेंगे? इसमें बेहतर समाधान तो यह है कि बच्चों के लिए स्कूलों में हलकी-फुलकी शरारत करने की भी समय अवधि होनी चाहिए ताकि वे भविष्य में जरा-जरा सी बात पर आहत न हों।

आज अभिभावकों द्वारा भारी भरकम रकम चुकाने के बाद भी छात्रों की आत्महत्या के अधिकांश मामले आधुनिक महंगे स्कूलों, कोचिंग संस्थानों से आ रहे है। मैंने पिछले दिनों राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो द्वारा जारी आंकड़ों को देखा तो अकेले कोटा में छात्र-छात्राओं द्वारा 2014 में 100 आत्महत्या के मामले दर्ज किए गए जिनमें से 45 कोचिंग छात्र थे तो वहीं 2015 में 20 छात्रों के खुदखुशी के मामले सामने आए थे।

दरअसल शिक्षण संस्थाओं की तो प्रकृति है कि वह छात्रों का केवल क्लासरूम तक ही ध्यान रखती है। इसके बाहर की जिम्मेदारी छात्रों की खुद की होती है कि वह बाहर की संस्कृति से तालमेल कैसे बैठा पाते हैं। ऐसे में कुछ तो कई प्रेम संबंधों में सुकून ढूंढने लगते हैं। कुछ अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं। यदि आप बच्चों को अच्छे नम्बरों, करियर, नौकरी, उनकी आदतों, आदि के लिए लगातार डांटते फटकारते रहते हैं, तो वे खुद की दुनियां को सीमित समझने लगते हैं और जब उनका मानसिक दर्द असहनीय हो जाता है तब वे यह कदम उठाते हैं।

तीसरा सब जानते हैं छात्रों को पढने खेलने आगे बढ़ने के लिए साधनों, संसाधनों के साथ जरूरत के हिसाब से उम्र के एक पड़ाव तक आर्थिक सहायता की भी जरूरत होती है। कई बार यह सब चीजें तो उन्हें मिल जाती हैं किन्तु किसी भी तनाव या दबाव के दौर में उन्हें नैतिक, मानसिक समर्थन नहीं मिल पाता जो पहले संयुक्त परिवारों में मिलता था। आप बच्चों को 20 वर्ष की आयु तक परिपक्व मत समझिये क्योंकि इस अवस्था तक वह अपनी सभी परेशानियों का हल अकेला नहीं खोज सकता, उसके साथी बनिए, उसके सहयोगी बनकर उसे परेशानियों का सामना करने की हिम्मत और प्रेरणा दीजिये।

अब हो क्या रहा है कि ज्यादातर जगह माता-पिता दोनों कामकाजी होते हैं. बच्चों को महंगे स्कूलों में डालकर अपनी पूर्ण जिम्मेदारी समझ लेते है, लाड-प्यार के नाम पर उसे महंगे खिलोने थमा देते हैं। इससे एक पल को बच्चा खुश तो हो जाता हैं लेकिन उसके अन्दर कहीं न कहीं अकेलेपन में अवसाद घर करने लगता है। ऊपर से माता-पिता का हर रोज ये कहकर दबाव बनाया जाना कि हम उसके ऊपर किस तरह धन खर्च कर रहे हैं यदि अच्छे अंक नहीं आये तो सोसायटी में उनकी इज्जत कम हो जाएगी।

आज अभिभावकों को समझना होगा कि लाड-प्यार, पालन-पोषण की परिभाषा बड़े स्कूल में दाखिला, महंगे खिलोने, ढेर सारे कपड़ों तक सीमित नहीं है। आप उन्हें

- शेष पृष्ठ 7 पर

अण्डमान-निकोबार के प्रतिबन्धित द्वीप पर विदेशी पर्यटकी हत्या के सम्बन्ध में

काशः ऐसे तीर पहले भी चल गए होते !

काश ऐसा ही एक तीर तब चल गया होता और दक्षिण भारत वेटिकन के विचारों से बच गया होता। सिर्फ तभी नहीं यदि एक ऐसा तीर भारत भूमि में घुसते हुए मुस्लिम प्रचारक अलबरूनी को लग जाता तो शायद महमूद गजनवी भारतीय संस्कृति को रोंदने की हिम्मत न करता, न ही भारत की प्राचीन महान संस्कृति पददलित होती।

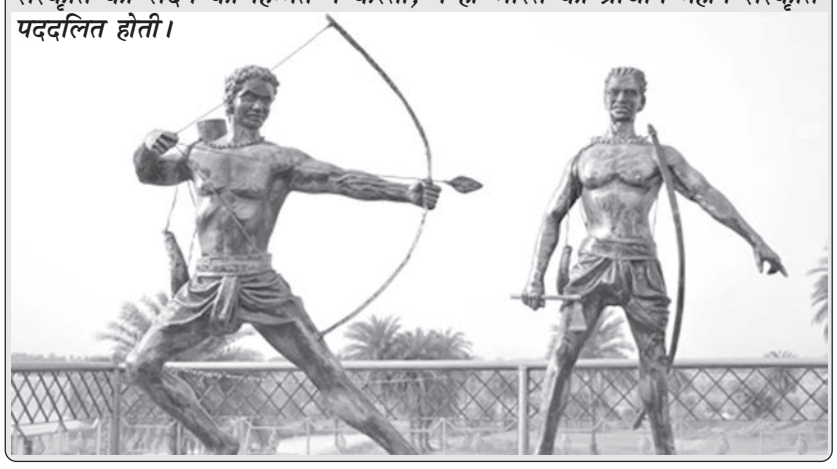

बहुत पहले पढ़ा था कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' अर्थात् अति का सभी जगह निषेध है। लेकिन इसका सही अर्थ अब समझ आया जब अंडमान निकोबार के द्वीप समूह के उत्तरी सेंटिनल द्वीप पर सेंटिनल जनजाति समुदाय के लोगों ने अपने क्षेत्र में घुस रहे एक अमेरिकी ईसाई धर्म प्रचारक को तीर से मार डाला। असल में सेंटिनल जनजाति के लोग अपने द्वीप पर किसी बाहरी को आने नहीं देते और अगर कोई बाहरी व्यक्ति अपनी वाँछित मर्यादा का उल्लंघन कर यहां आ भी जाए तो इस जनजाति के लोग उसे तीर की सहायता से मार देते हैं। इनके यहाँ कोई भाषाई जवाब नहीं है, न इनके यहाँ धर्मनिरपेक्षता के खोखले सिद्धांत। यह एक जनजाति है जिसकी अपनी परम्परा और संस्कृति है जिसकी रक्षा ये लोग तीर की सहायता से करते आये हैं।

अध्ययनकर्ता बता रहे हैं कि इस जनजाति का बीते 60 हजार सालों में कोई विकास नहीं हुआ है। आज भी ये लोग आदिम जीवन ही जी रहे हैं। यह लोग मछली और नारियल पर निर्भर रहते हैं। इनकी भाषा भी बाकी जनजातियों के मुकाबले समझ से बाहर है। यह जिस द्वीप पर रहते हैं वह पोर्ट ब्लेयर से 50 किमी पश्चिम में स्थित है। इनकी संख्या भी कोई ज्यादा बड़ी नहीं है यही कोई सौ डेढ़ सौ के आस-पास मानी जाती है। साल 1960 के बाद से इस जनजाति तक पहुंचने के कई प्रयास किए गए, लेकिन सब असफल रहे। यह लोग आक्रमण करते हुए उग्रता के साथ अपने इरादे साफ बता चुके हैं जिन्हें विश्वास नहीं होता वह अमेरिकी धर्मप्रचारक की हत्या की खबर को पुनः पढ़ सकते हैं।

कहा जाता है कि संस्कृतियों को संस्कृतियाँ ही खाती है, सभ्यताओं को सभ्यता और धर्म को अधर्म गटक जाता है तो परम्पराओं को परम्पराएं उधेड़ देती हैं। इस कारण हमेशा इनकी रक्षा करनी होती हैं। वह रक्षा किस तरह की जाये मुझे नहीं लगता सेंटिनल जनजाति से बढ़िया उदाहरण किसी भी युग या अतीत से लिया जा सकता हैं। मैं इस प्रसंग में नहीं जाना चाहता कि सेंटिनल जनजाति ने ये अच्छा किया या बुरा। ये लोग अन्य लोगों से जुड़ना नहीं चाहते! बल्कि प्रसंग ये होना चाहिए कि सैंकड़ों की संख्या में रह रही जनजाति अपनी संस्कृति और परम्पराओं का बचाव किस तरह कर रही है।

काश हम भी इस तरह अपने धर्म और संस्कृति का बचाव कर पाते! कौन नहीं जानता भारत में पादरियों का धर्म-प्रचार किस तरह बढ़ा चला आ रहा है। लालच, सेवा, प्रलोभन भय न जाने किस-किस आधार पर ये लोग हमारे धर्म को मिटाने का एक खुला षडयंत्र रच रहे हैं जोकि एक लम्बे अरसे से चला आ रहा है, जब 1506 ईसवीं में फ्रांसिस जेवियर नाम का ईसाई पादरी गोवा के तट पर उतरा था जिसने पुर्तगालियों की सहायता से भारतीयों का जबरन धर्म परिवर्तन कराना शुरू कर दिया और गोवा का धार्मिक संतुलन बदलकर रख दिया, काश एक ऐसा ही तीर जब चल गया होता तो गोवा में ईसाइयत और पुर्तगालियों का कब्जा न हुआ होता।

सब जानते हैं धार्मिक सहिष्णुता एक महान गुण है जो हमें अपने वैदिक ग्रंथो से विरासत में मिला हैं जिसका हमने प्राचीन काल से पालन भी किया और करते रहेंगे। किन्तु अधर्म को सहना कायरता और अवगुण हैं। इसकी हानि समय-समय पर हमारे देश-काल और संस्कृति को उठानी पड़ी है। कहा जाता है कि किसी दूसरे के धार्मिक विचारों तथा कार्यो में हस्तक्षेप न करना स्वयं ही एक धार्मिकता है। इस गुण का जितना व्यापक परिचय हमने दिया है, उसका हजारवाँ भाग भी संसार की कोई अन्य जाति न दें सकी लेकिन इससे हमें क्या मिला धर्म का ह्रास और अपना उपहास?

नतीजा यूरोप की ईसाइयत से भरे जहाजी बेड़े हिंदुस्तान के किनारों पर उतरते गये तो जिसकी बदौलत वेटिकन के पॉप की तो तन्हाई खत्म हो गई, लेकिन हमारी जो बेचैनी बढ़ी जो आजतक खत्म नहीं हुई। इससे हमारी संस्कृति कितनी और किस तरह प्रभावित हुई इसका अंदाज सहज लगाया जा सकता है? पर इस सबके बावजूद भारत एक धर्म-निरपेक्ष देश बना रहा और भारत-सरकार धर्म निरपेक्षिता की संरक्षिका। आज भी ईसाई पादरी इस धर्मनिरपेक्षता की आड़ में हमारी प्राचीन संस्कृति को मिटाकर अपने ईसाई धर्म का विस्तार करने में बुरी तरह जुटे हुए हैं। स्वयं देखिये चीन में जन्मा जॉन चाऊ अमेरिका में जाकर ईसाइयत के विचार को ग्रहण करता है और फिर ईसाइयत के प्रचार के लिए भारत के छोटे-छोटे द्वीपों में पहुँचता है। बताया जा रहा है कि दुनिया के कई हिस्सों में घूम चुका था। जॉन इस द्वीप पर पहुंचकर आदिवासी जनजाति के लोगों को ईसाई धर्म से जोड़ना चाहता था। इसी मकसद से वहे अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में पोर्ट ब्लेयर पहुंचा था। सेंटिनल जनजति ने कोई गलत कार्य नहीं किया क्योंकि जिस समय जॉन को तीर मारा गया था उस समय उसने हाथ में जो बाइबल पकड़ा हुआ था, ठीक उसके ऊपर तीर लगा। यदि वह उसे तीर नहीं मारते तो कुछ समय बाद इस जनजाति की अपनी संस्कृति और परम्परा मारी जाती।

दक्षिण भारत में भी ऐसा ही हुआ था जब लगभग सन् 1606 में रोबर्ट दी नोबिली को दक्षिण भारत में पहुंचकर हिन्दुओं को धर्मान्तरण कराना लगभग असंभव कार्य लगा तो उसने धूर्तता से धोती पहन कर एक ब्राह्मण का वेश धारण किया और पूरे दक्षिण भारत में यह खबर फैला दी गयी वह रोम से आया एक ब्राह्मण है। धीरे-धीरे उसने सत्संग सभाओं में ईसाई प्रार्थनाओं को शामिल करना शुरू कर दिया। आज इसके नतीजे आप स्वयं देख सकते हैं किसी धार्मिक आंकड़ों के शायद ही आप मोहताज होंगे। मैं फिर इतना कह सकता हूँ कि काश ऐसा ही एक तीर तब चल गया होता और दक्षिण भारत वेटिकन के विचारों से बच गया होता। सिर्फ तभी नहीं यदि एक ऐसा तीर भारत भूमि में घुसते हुए मुस्लिम प्रचारक अलबरूनी को लग जाता तो शायद महमूद गजनवी भारतीय संस्कृति को रोंदने की हिम्मत न करता, न ही भारत की प्राचीन महान संस्कृति पददलित होती।- ***राजीव चौधरी***

क्रान्तिकारियों की कथा

अमर शहीद राजगुरु

गतांक से आगे -

मुख़बिर (वीरभद्र तिवारी) को शीघ्र ही कानपुर से इलाहाबाद बुला लाने की तजवीज़ थी। चन्द्रशेखर आज़ाद को किसी भी कीमत पर धर दबोचना था। हालांकि शम्भूनाथ ने निर्भीक होकर स्पष्ट शब्दों में मना ही किया कि ऐसा करने से मेरा 'सोर्स' एक्सपोज़ हो जायेगा, वह कहीं का न रहेगा, उसकी जान के लाले पड़ जायेंगे, लेकिन अंग्रेज़ अफ़सर टस-से-मस न हुए।

हार-झख मारकर शम्भूनाथ को कानपुर वापस लौटना पड़ा। वीरभद्र को साथ लेकर रातों-रात फिर इलाहाबाद पहुंचे। इधर, आज़ाद को पहचानने वाला स्टाफ् इकट्ठा किया गया और सारे शहर में, विशेषकर प्रयाग के कटरा मुहल्ले में, नाकेबन्दी कर दी गयी। कामयाबी मिलने पर सभी को 'रैंकप्रमोशन' और इनामात देने का आश्वासन भी दे दिया गया। सादे लिबास में सबकी 'राउण्ड दि क्लाक' ड्यूटी लगा दी गयी।

बृहस्पतिवार, 26 फरवरी, 1931 : वीरभद्र को कटरा में ठहराया गया। सम्पर्क क़ायम रखने की गरज से शम्भूनाथ भी अपने विश्वासपात्र शैडो-अर्दली मोहम्मद रज़ी के साथ कटरा में ही शिशु प्रेस के पास ठहरे।

सन्देश आने शुरू हुए : ''पण्डित जी (चद्रशेखर आज़ाद) यहीं हैं। सुखदेवराज और जगदीश ने हिन्दू बोर्डिंग हाउस तथा विश्वविद्यालय के चक्कर लगाये। बटुकनाथ अग्रवाल और जगदीश कल घंटों एलफ्रेड पार्क में सुखदेवराज के साथ रहे। मुसम्मात सुशीला देवी आज सुबह ही दिल्ली से आयीं।''

आज़ाद का आवास ज्ञात होने पर भी डिप्टी कमिश्नर बकफ़ोर्ड और वरिष्ठ गुप्तचर अधिकारियों की राय से उन्हें वहीं गिरफ़्तार करना उचित नहीं समझा गया। गोली चलने का सिर्फ अन्देशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी था। लोडेड माउज़र के साथ आज़ाद एनकाउण्टर (मुठभेड़) के लिए हर घड़ी कमर कसे तैयार रहते थे। साथ में कई मैगज़ीन स्पेयर राउण्ड्स भी रखते थे। निशाना तो उनका था ही अचूक! जनता द्वारा क्रांतिकारियों को सहयोग दिये जाने की भी पूरी-पूरी आशंका थी।

तय यही हुआ कि जहां तक मुमकिन हो निर्जन स्थान में ही शिकार खेला जाये। चूंकि उन्हें ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए पांच-पांच हज़ार रुपये के तीन नक़द इनामात सरकार द्वारा घोषित किये ही जा चुके थे, अतः बजाय गिरफ्तार करने के गोली का ही निशाना बनाना सर्वसम्मति से तय किया गया।

- क्रमशः

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार : क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

खेद व्यक्त

खेद है कि प्रैस गड़बड़ी के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक सं. 4 दिनांक 10 दिसम्बर से 16 दिसम्बर प्रकाशित नहीं हो सका। इसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

विदेश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं प्रमुख आर्यसमाजों से पधारे अधिकारीगण

श्री सुरेन महाबली जी
(हॉलैंड

श्री सूरज बीरे जी
(हॉलैंड)

सुश्री चन्द्रलेखा बीरे जी
(हॉलैंड)

श्री इन्द्रगंगा बिशुन सिंह जी
प्रधान, आर्य दिवाकर, सूरीनाम

सुश्री मधु वार्ष्णेय जी
कनाड़ा

डॉ. रमेश गुप्ता जी
पू.प्रधान, आर्य प.सभा अमेरिका

श्री विश्रुत आर्य जी
प्रधान, आर्य प.सभा अमेरिका

श्री भुवनेश खोसला जी
मन्त्री, आर्य प.सभा अमेरिका

श्री कमल राय जी
प्रधान, आर्य प्र. सभा ऑस्ट्रेलिया

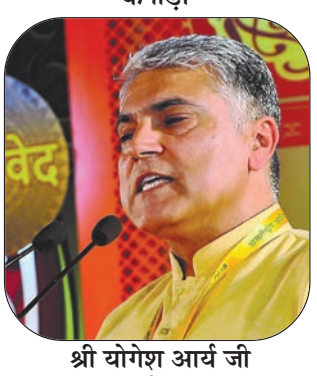

श्री योगेश आर्य जी
(ऑस्ट्रेलिया)

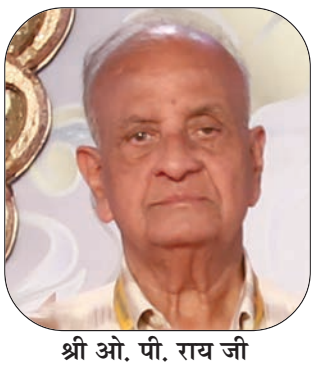
श्री ओ. पी. राय जी
(सिंगापुर)

पं. श्री गुरुदत्त जी
(फीजी)

सुश्री कैथरीन लवराजकुमार
(न्यूजीलैंण्ड)

श्री हरिदेव रामधनी जी
प्रधान, आर्य सभा मॉरिशस

श्री रामपलट पाण्डे जी
(आर्यसमाज बैंकॉक, थाईलैंड)

श्री अशोक खेत्रपाल जी
प्रधान, आर्य प्र. सभा म्यांमा

स्वामी चिदानन्द जी
(बंगलादेश)

आचार्य सुभाष जी
(बंगलादेश)

श्री कमलाकान्त आत्रये जी
प्रधान, नेपाल आर्यसमाज

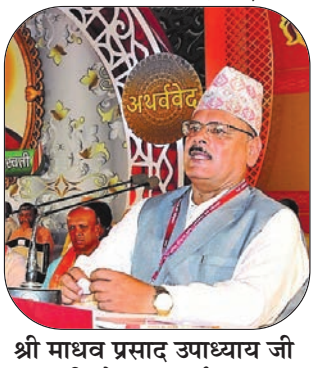

श्री माधव प्रसाद उपाध्याय जी
मन्त्री, नेपाल आर्यसमाज

डॉ. रामविलास जी
प्रधान, आर्य प्र.स. द.अफ्रीका

श्री अनिल कपिला जी
(पूर्वी अफ्रीका)

श्रीमती देवी लखनाथ जी
(ग्याना)

पं. नरदेव जी
(हौलैंण्ड)

डॉ. सतीश प्रकाश जी
(अमेरिका)

सुश्री इन्द्राणी राम प्रसाद जी
(त्रिनिडाड)

आर्यसमाज हैदराबाद, सिंध (पाकिस्तान) के प्रधान श्री अम्बा राम आर्य महामन्त्री श्री बालचन्द्र आर्य के नेतृत्व में पाकिस्तान से पधारे आर्य प्रतिनिधियों के साथ महाशय धर्मपाल जी, श्री गंगा प्रसाद जी एवं श्री सुरेशचन्द्र अर्य जी एवं अन्य

भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी को महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट।

गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी को उन्हीं का चित्र भेंट करके सम्मानित करते सभा अधिकारी एव अतिथिगण

आचार्य देवव्रत जी (माननीय राज्यपाल हिमाचल), श्री गंगा प्रसाद जी (माननीय राज्यपाल सिक्किम) एवं प्रो. जगदीश मुखी जी (माननीय राज्यपाल असम) को स्मृति चिह्न भेंट करते सभा अधिकारी एवं अतिथिगण

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी, हरियाणा प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी एवं नई दिल्ली क्षेत्र की सांसद सुश्री मीनाक्षी लेखी जी को स्मृति चिह्न भेंट करते सभा अधिकारीगण

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी (चेयरमैन, जे.बी.एम.ग्रुप), श्री अशोक कु. चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी वि.वि.), माता सन्तोष मुंजाल जी, श्री सुनीलकान्त मुंजाल जी एवं श्री योगेश मुंजाल जी (हीरो परिवार) का सम्मान

आर्यसमाज बैंकॉक (थाईलैंड) एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य गौरव संस्थान के सम्मान से सम्मानित करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान, केन्द्रीय मन्त्री डॉ. सत्यपाल सिंह, सांसद मनोज तिवारी एवं दि विधान सभा अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल

महाशय धर्मपाल आर्य गौरव सम्मान -2018 प्राप्त करते श्री डॉ. बिश्वराम राम विलास (द. अफ्रीका) एवं सुश्री कैथरीन लवराजकुमार (न्यूजीलैंड)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी 'आर्य गौरव सम्मान' से सम्मानित करते दिल्ली सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारीगण।

- शेष पृष्ठ 8 पर

Veda Prarthana - II Regveda - 21/2

I Resolve to Prevent Bad Thoughts Coming to My Mind

परोपेहि मनस्पाप किमशंस्तानि शंससि। परेहि न त्वां कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु मे मनः।।

अथर्ववेद 6/45/1

Paropehi manaspapa
kimashamstani shamsasi.
Parehi na tvam kamaye
vraksham vanani samchar
graheshu goshu me manah.

(Atharva Veda 6:45:1)

The desires and thoughts to do something wrong or perform a sinful deed only emerge when a person in his/her mind and intellect has decided that if he/she cleverly does such a deed nobody else would see or find out about it, whereby he/she would not be caught, nor punished. Moreover, in their mind such a deed is a minor flaw and not really a bad sin.

Most persons after performing a bad or sinful deed do not want to admit their responsibility for having done so. They do not want to acknowledge that I did this sinful deed, I am the culprit, I am guilty, and I am the one who should be punished. They either try to put the blame on others or in cases where it is obvious that they are guilty then blame it on lame excuses. Common excuses are as follows my family was hungry, I did not want to do the deed but my evil mind made me do it, I had to keep up with the neighbors and others also are doing so. Some blame spirits or the devil made them do it. Still others blame it on destiny, which God predeter mined for them. They blame God as the cause of whatever they do including all types of sinful deeds, they themselves are mere passive participants in God's design.

According to Vedic scriptures, what has been stated in the above three paragraphs is moral ignorance and spiritual deception. The Vedic principles are that for all bad deeds whether performed at the thought, word or action level, the soul is eventually responsible because the soul possesses the ability to exercise freewill. The soul is a conscious entity and it alone is capable of directing the mind and body. Good and bad thoughts do not emerge in the mind but the soul is their generator. As soon as one notices that there are bad or evil thoughts in one's mind, he/she should become alert ant utilizing soul's innate power remove those thoughts from the mind. Mind is like a television set and the soul as the remote control. Whaterver TV channel we want to watch, whether it has good or bad programs, we press the correct remote buttons for them and do not press buttons for channels we do not want to watch. Similarly, whatever good or bad thoughts come in the mind, the desires for them are controlled by our soul.

This Veda mantra advises us that as soon as a bad or sinful thought emerges in our mind the soul should command the mind that I will not let such thoughts remain in my mind and propagate. I no longer relish the potential transient gains or pleasures brought about by fulfillment of the bad thoughts; instead, I abhor/hate the emergence of these thoughts and want them to go far away from me. One should declare to the mind that I am trying to become a more virtuous person, I have faith in God's help in my effort, I have high ideals and am determined to

- Acharya Gyaneshwarya

succeed, and after that one should scold one's own mind for letting bad thoughts emerge. One should remind the mind that bad or sinful thoughts if carried out will result in my being caught followed by punishment, dishonor and ill fame. I do not want such bad things happen to me. I have a stable home and family, wife, children, parents all of whom will indirectly suffer if I perform bad deeds. In the futuure, I will devote my time for the betterment of my family, cows and other animals instead of letting good happenings be destroyed due to my negligence. Therefore, I want to nip the budding bad thoughts so that they never get a chance to sprout by my actually carrying them out.

Dear God we pray to You to give us spiritual strength and help make our souls strong, full of courage and bravery. Also, please help make our mind and intellect full of virtuous thoughts and the ability to prevent, control and uprooting any bad thoughts that emerge in our mind.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यासः तुमुन् प्रत्यय (को,के लिए) (73)

गतांक से आगे....

तुमुन् प्रत्यय (को,के लिए) (तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्) को या के लिए अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है अतः इसके रुप नहीं चलते हैं।

उदाहरण- सः कार्यं कर्तुम् इच्छति। यहां कृ धातु में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है अतः वाक्य का अर्थ हुआ ''वह कार्य करने को चाहता है''।

2) अहं फलानि खादितुम् इच्छामि।	मैं फलों को खाना चाहता हूं।
3) नेता सभायां वक्तुम् इच्छति।	नेता सभा में बोलना चाहता है।
4) बालिका विद्यालये पठितुम् इच्छति।	बालिका विद्यालय में पढना चाहती है।
5) कृष्णः ग्रामं गन्तुम् इच्छति।	कृष्ण गांव को जाना चाहता है।
6) त्वं गुरुं वन्दितुम् इच्छ।	तुम गुरु का अभिवादन करना चाहो ।
7) कृषकः गां दोग्धुम् गच्छति।	किसान गाय को दुहने को जाता है।
8) मल्लः मल्लं जेतुं शक्नोति।	पहलवान पहलवान को जीत सकता है।
9) सा पीडां सोढुं जानाति।	वह दर्द को सहन करना जानती है।
10) पाचकः पक्तुं पाकशालां गच्छति।	रसोईया पकाने के लिए पाकशाला को जाता है।

- क्रमशः

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

आर्यसमाजी हूँ

जब पण्डित श्री गणपतिजी शर्मा ने काश्मीर के शास्त्रार्थ में पादरी जॉनसन को परास्त किया तो सर्वत्र उनका जय-जयकार होने लगा। उस समय शास्त्रार्थ के सभापति स्वयं महाराजा थे। महाराजा ने प्रेम से पण्डितजी से पूछा- कहो गणपति शर्मा! तुम्हारे-जैसा विद्वान् आर्यसमाजी कैसे हो गया? क्या सचमुच तुम आर्यसमाजी हो? ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सम्भव है महाराजा ने सोचा हो कि मेरे प्रश्न के उत्तर में पण्डितजी कह देंगे कि मैं आर्यसमाजी नहीं हूँ।

पूज्य पण्डितजी पेट-पन्थी पोप नहीं थे। नम्रता से, परन्तु सगर्व बोले, ''हाँ, महाराज! मैं हूँ तो आर्यसमाजी।''

उस सच्चे ब्राह्मण के यशस्वी, तपस्वी जीवन से प्रभावित होकर ही तो 'शंकर' जी ने लिखा था-

पैसों के पुजापे पानेवाले को न पूजते हैं,
पूज्य न हमारे लंठ लालची लुटेरे हैं।
पोंगा पण्डितों की पण्डिताई के न चाकर हैं,
ज्ञानी गणपति की-सी चातुरी के चेरे हैं।।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 2 का शेष

आत्म हत्या की ओर ....

पढ़ा रहे हैं तो हर समय उन पर इसका अहसान मत दिखाइए। ये बच्चे हैं आपके घोड़े नहीं कि आप इन पर दांव लगा रहे हैं कि अगर ये चूक गये तो आपका दांव बेकार हो जायेगा। उन पर अहसान जताने के बजाय उन्हें जिंदगी की अहमियत का अहसास दिलाएं। उन्हें समझाएं जिंदगी जीना एक खूबसूरत चीज है और जिंदगी की आंखों में आंखें डालकर देखना असली बहादुरी है। हार-जीत जीवन का नियम है, हम विजेता बनकर जन्म नहीं लेते खिलाड़ी बनकर जन्म लेते हैं। जब हम जीवन के हर एक मैदान पर अच्छा खेलते हैं तभी विजेता बनते हैं। शायद तभी वह समस्याओं का सामना करेंगे वरना उनके पास सिर्फ घुटन, अकेलापन, चिड़चिड़ापन मानसिक अवसाद के साथ आत्महत्या जैसी चीजें होंगी। ***- सम्पादक***

स्थापना दिवस सम्पन्न

वैदिक श्रीमद्दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय बिजनौर का स्थापना दिवस 24-25 नवम्बर 2018 को सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री अटल राय (डी. एम.-बिजनौर) ने ध्वजारोहण कर कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। कार्यक्रम में सर्वश्री सौरभ सिंगल, अध्यक्ष, पवन विश्नोई, रवि बहल, पतराम त्यागी, सुचि सिंह विधायक एवं भूपेन्द्र वकील तथा मूर्धन्य विद्वान ओम प्रकाश शास्त्री इत्यादि ने मंच की शोभा बढ़ाई। मंच संचालन गुरुकुल प्रबन्धक श्री सुशील कुमार त्यागी तथा दिव्यकिरण आर्या ने किया। **- सचिव**

प्रथम पृष्ठ का शेष **विश्व पुस्तक मेला : 5 जनवरी से .....**

पुस्तक मेले में केवल एक व्यक्ति को एक ही सत्यार्थ प्रकाश दिया जाएगा, जिससे आपके द्वारा दिए गए सहयोग का सदुपयोग हो और वास्तव में उसी व्यक्ति को सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त हो जो उसे पढ़ने की इच्छा रखता है। सभा द्वारा इस वर्ष 50 हजार लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रुपये में पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। पुस्तक मेले की सफलता एवं जन सामान्य तक सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य में उपलब्ध कराने के लिए आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। आप अपनी ओर से 10, 20, 50, 100, 200, 500, 1000 सत्यार्थ प्रकाश को अल्प मूल्य में उपलब्ध कराने के लिए 20/- प्रति की दर से सहयोग प्रदान कर सकते हैं। दिल्ली आर्य प्रतितिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान/सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है। सत्यार्थ प्रकाश छूट सहयोग प्रदान करने वाले समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, विद्यालयों, गुरुकुलों तथा व्यापारिक संस्थानों के नाम आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किए जाएंगे। कृपया अपनी सहयोग राशि **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर के माध्यम सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें। आप अपनी दान राशि सीधे सभा के निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं। **कृपया राशि जमा कराते ही अपनी डिपोजिट स्लीप की फोटो नाम पते के साथ श्री मनोज नेगी जी (9540040388) पर व्हाट्सएप्प अथवा** aryasabha@yahoo.com **पर ईमेल करें, जिससे आपको रसीद भेजी जा सके।**

यदि आप साहित्य प्रचार स्टाल पर नि:शुल्क समयदान करने के इच्छुक हैं तो कृपया संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य (9540012175) से सम्पर्क करें।

- महामन्त्री

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत

देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की श्रृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

- संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 अपने अनुभव एवं सुझाव भेजें

आप जानते ही हैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली 25 से 28 अक्तूबर तक स्वर्ण जन्यन्ती पार्क, रोहिणी में सम्पन्न हो चुका है।

इस ऐतिहासिक महासम्मेलन के सम्बन्ध में प्रत्येक आर्य महानुभाव के अपने अनुभाव हैं। इसी प्रकार किसी के मन में किसी व्यवस्था के प्रति कोई शिकायत, किसी के मन में कोई जिज्ञासा तो किसी के मन में सम्मेलन की व्यवस्था में सुधार हेतु सुझाव होंगे। सभा आपके अनुभवों, जिज्ञासाओं, शिकायतों, सुझावों को लेकर आगामी आर्य महासम्मेलन को और भी अधिक व्यवस्थित, सुखद, प्रेरक बनाने का प्रयास करती है। अत: आपसे निवेदन है कि यदि आपके मन में कोई प्रश्न, सुझाव, अनुभव, जिज्ञासा हो तो कृपया उसे लिखकर सम्मेलन कार्यालय को अवश्य भेजें, इससे सम्मेलन के संयोजकों को जहां आगे के सम्मेलनों के लिए प्रेरणा मिलेगी वहीं ऐसे सम्मेलनों का एक इतिहास भी आपके अनुभवों से ही निर्मित हो सकेगा। आपके इन अनुभवों, सुझावों, विचारों ग्रहण करते हुए सभा एक पत्रिका का भी प्रकाशन कर रही है आप इसमें अपने द्वारा लिए गए चित्रों को अपने अनुभवों 'महासम्मेलन जैसा मैंने देखा' के अन्तर्गत प्रकाशित करने हेतु भी अवश्य भेजें। आप हमें aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी कर सकते हैं।

- सम्मेलन संयोजक

A Media Centre/IPTV
based at
Connaught Place, Delhi
needs:
• Producers • Anchors
• Camera Persons • Reporters
• Panel Producers • IT head
• VT Editors • Graphic Artists
• Social Media Experts
• DTP Operators-Hindi
• Store Keeper • Accountant
EMail your CV
mdmc.coo@gmail.com

शोक समाचार **श्री विद्याभूषण गुप्ता को पत्नीशोक**

आर्यससमाज हौजखास नई दिल्ली में मन्त्री श्री विद्या भूषण गुप्ता जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरोज गुप्ता जी का 10 दिसम्बर, 18 को 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 21 दिसम्बर, 2018 को श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय (गुरुकुल गौतम नगर) नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों सहित सभा अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री ओम प्रकाश नरुला जी का निधन

आर्यसमाज डोरी वालान (किशनगंज मिल एरिया) के पूर्व प्रधान एवं वर्तमान संरक्षक श्री ओम प्रकाश नरुला जी का दिनांक 6 दिसम्बर, 2018 को 97 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 7 दिसम्बर को पंचकुईयां रोड शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 8 दिसम्बर को आर्यसमाज डोरी वालान में सम्पन्न हुई जिसमें उनके निजी परिवार के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों सहित सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के उप प्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री सत्यप्रकाश गोयल जी का निधन

आर्यसमाज यमुना विहार के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश गोयल जी का दिनांक 16 दिसम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 17 दिसम्बर को पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 दिसम्बर को उनके आवास - सी-85 यमुना विहार मे सम्पन्न होगी।

भजनोपदेशक श्री प्रताप सिंह आर्य को पितृशोक

आर्यसमाज के भजनोपदेशक श्री प्रताप सिंह आर्य जी के पूज्य पिता श्री फूल सिंह जी का 9 दिसम्बर को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे गत एक मास से दुर्बलता महसूस कर रहे थे।

भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द जी का निधन

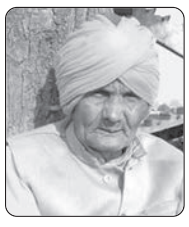

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के भजनोपेदशक स्वामी देवानन्द जी का दिनांक 2 दिसम्बर को 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति मं शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धंजलि सभा सामुदायिक भवन, ग्राम सुल्तानपुर, सै. 128, ग्रेटर नोएडा में 10 दिसम्बर को सम्पन्न हुई।

श्री उमाशंकर-रमाशंकर आर्य को मातृशोक

रामगली आर्यसमाज हरि नगर घंटाघर नई दिल्ली के सदस्य श्री उमा शंकर आर्य एवं श्री रमाशंकर आर्य जी की पूज्या माताजी श्रीमती पार्वती देवी जी का दिनांक 7 दिसम्बर को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा उनके आवास आर.जेड. सी-37, गांधी मार्केट, सागरपुर वैस्ट नई दिल्ली-110046 में 20 दिसम्बर को सायं 3 से 4 बजे आयोजित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20-21 दिसम्बर, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 दिसम्बर, 2018

ओ३म्

92 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

मंगलवार 25 दिसंबर 2018

यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली - 2

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा (पं.)

महाशय धर्मपाल, प्रधान — सतीश चड्डा, महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)

प्रतिष्ठा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का द्विवार्षिक निर्वाचन 11 नवम्बर, 2018 को आर्यसमाज बक्शी नगर जम्मू के सभागार में सम्पन्न हुआ, जिसमे सर्वसम्मति से श्री अरुण चौधरी जी को प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। शेष कार्यकारिणी का निर्वाचन निम्न प्रकार किया गया -

प्रधान: श्री अरुण चौधरी, **महामन्त्री :** श्री अरुण आर्य, **कोषाध्यक्ष:** श्री योगेश गुप्ता
उप प्रधान: सर्वश्री अरुण गुप्ता, राकेश चौहान, आत्म प्रकाश, भारत भूषण, राजीव सेठी।
उपमन्त्री: सर्वश्री बलवान सिंह, चुन्नी लाल, नरेन्द्र त्रेहन, निश्चिन्त खन्ना, रविकान्त।
अधिष्ठाता वेद प्रचार : श्री प्रतिभा पुरन्धी। **पुस्तकाध्यक्ष:**- श्री सुभाष गुप्ता।

श्री अरुण चौधरी जी
प्रधान

श्री अरुण आर्य जी
महामन्त्री

श्री योगेश गुप्ता जी
कोषाध्यक्ष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों एवं सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकानाएं।

खुशखबरी! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष 2019 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह